



आशा

1.261

ASHA ARCHIVES

श्रीगणेशायनमः॥ श्रीगुरुवेनमः॥ श्रीत्रैलोक्यमहाकाशेनमः॥ ॐ धनित्या
नविधिर्निश्चयत॥ नासिय॥ दवस्नानयाचक॥ चिथसिन्धुस्नानत॥ वसिदाका
वाय॥ ॐ र्घां र्घ्यां र्घ्यां र्घ्यां वाय॥ ॥ नासिय॥ ॐ र्जां र्जां र्जां र्जां वाय॥ ॐ
विद्यातत्वाय स्वाहा॥ ॐ र्गिवतत्वाय स्वाहा॥ वसुतत्वाय स्वाहा॥ ॐ र्माय स्वाहा॥
कर्त्तव्याय स्वाहा॥ ॐ र्माय स्वाहा॥ ॐ र्माय स्वाहा॥ ॐ र्माय स्वाहा॥ ॐ र्माय स्वाहा॥

सनत॥ ॐ र्माय स्वाहा॥ ॐ र्माय स्वाहा॥ ॐ र्माय स्वाहा॥ ॐ र्माय स्वाहा॥ ॐ र्माय स्वाहा॥
स्वाय स्वाहा॥ ॐ र्माय स्वाहा॥ ॐ र्माय स्वाहा॥ ॐ र्माय स्वाहा॥ ॐ र्माय स्वाहा॥ ॐ र्माय स्वाहा॥
नमः॥ ॐ र्माय स्वाहा॥ ॐ र्माय स्वाहा॥ ॐ र्माय स्वाहा॥ ॐ र्माय स्वाहा॥ ॐ र्माय स्वाहा॥
नमः॥ ॐ र्माय स्वाहा॥ ॐ र्माय स्वाहा॥ ॐ र्माय स्वाहा॥ ॐ र्माय स्वाहा॥ ॐ र्माय स्वाहा॥
नमः॥ ॐ र्माय स्वाहा॥ ॐ र्माय स्वाहा॥ ॐ र्माय स्वाहा॥ ॐ र्माय स्वाहा॥ ॐ र्माय स्वाहा॥
नमः॥ ॐ र्माय स्वाहा॥ ॐ र्माय स्वाहा॥ ॐ र्माय स्वाहा॥ ॐ र्माय स्वाहा॥ ॐ र्माय स्वाहा॥

नमः॥ ॐ ह्रीं गङ्गा नी नमः॥ ॐ ह्रीं मधुमाय नमः॥ ॐ ह्रीं अनामिकाय नमः॥ ॐ
ह्रीं कनिष्ठाय नमः॥ ॐ ह्रीं कनक तलत्रुमाय रुद्र॥ ह्रीं तिकन न्यासः॥
अथ अङ्ग न्यासः॥ ॐ ह्रीं हृदयाय नमः॥ ॐ ह्रीं गिन स स्वाहा॥ ॐ ह्रीं गिरा
येव षट्॥ ॐ ह्रीं कवचाय नमः॥ ॐ ह्रीं नगाय नमः॥ ॐ ह्रीं अक्रुमाय रुद्र॥ ह्रीं
ह्यङ्ग न्यासः॥ ॥ स्नान कर्मात्सत ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ॥ कलं षकाया वसं कल्यः

याय॥ ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीमङ्गला काती पूजामहं कनिष्ठा॥ ॥ विथं नय॥ ॐ चदनं
नमः॥ ह्रीं सिद्धे नमः॥ ह्रीं यष्टी नमः॥ ह्रीं अक्षतं नमः॥ ॥ अथ गिरा
पूजायाय॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं मङ्गलाय नमः॥ नं अग्नि मङ्गलाय नमः॥ वं वरुणा
य नमः॥ सं साम मङ्गलाय नमः॥ ॥ त्रिका लवाया वसूत मङ्गलाय नमः॥
ह्रीं २॥ चन्दनाक्षत गायत्रि धनु मङ्गलाय नमः॥ धतुं षन सकल गां हाय॥ धर्मः

हाय ॥ वृंतिर्गंखपूजा ॥ अर्घ्यपूजाथ (थदृशना ॥ ॥ अथ अर्घ्यपात्रपूजा ॥ क
तंन ॥ त्रेंजीं श्रीं सर्वमन्त्रसनायनमः ॥ त्रेंजीं श्रीं चतुःशी ॥ सनायनमः ॥
पात्रसना ॥ ॐ ॥ अर्घ्यपात्र ॥ धूपद्वय ॥ ॐ ॥ ॥ अथ ॥ त्रेंजीं श्रीं हंसस्य
महोत्सायदादभकलात्मननमः ॥ उद्यथन ॥ त्रेंजीं श्रीं संसाममोत्सायदा
उभकलात्मन अर्घ्यमृतपूर्जयनमः ॥ शुद्धितय ॥ स्नानतंन ॥ ग्लूँनमः ॥

विंद

ग्लूँनमः ॥ पूँनमः ॥ ग्लूँनमः ॥ ग्लूँनमः ॥ त्रिकां लवायावउप्रय ॥ मूलम
नुलधन १४ ॥ ॐ ॥ चन्दनाक्षतयानिमूर्तांदर्भय ॥ धवमुनथमहाय ॥
वृंति अर्घ्यपात्रपूजा ॥ मूलमनुलदवीयाकर्तय्यलयाय ॥ १० ॥ साक्षयस्य
निवानायसवाहनायसायूधायगलवद्वकक्षयानिन्ये श्रीयाइकां तर्प्यया
मि ॥ ३ ॥ धवभातसगुन्नतर्प्यल ॥ मूलसंतर्प्य ॥ ॐ श्रीमद्भक्ताकातीं तर्प्यया

मिनमः॥२१॥ ॥दवयागत्रासनत॥ॐ हूं कृतयूगादिचतुर्थ्युगमूः अस
 नायनमः॥ॐ हूं ऋग्वेदादिचतुर्वेदमूः असनायनमः॥ॐ हूं सूत्रादिदशः
 दिक्कृतिमूः असनायनमः॥ॐ हूं बुद्धादियष्टप्रतासनायनमः॥ॐ हूं महा
 तेनवप्रतासनायनमः॥ॐ हूं महागिवासनायनमः॥ अस्मिन्मनुस
 निधं कृत्स्नस्वाहा॥ ध्यानं यः ॥१०७॥ ॥ॐ बुद्धादियष्टप्रतासनायनमः॥

कृतीनां मूलेषु तेनवगिवाप्रत्यानसत्। तस्यार्द्धगदशमनकृदविदुः
 मातृयप्रसिद्धां तगवतीं यनमांदशस्यां॥ सिंहकातकपिष्टकतुनमः
 तार्द्ध्यागश्वत्रीमक्तमानवयंकिवक्तां। गृत्तादशयनशुम्भनयागः
 पातुं स्वदादवातकमिताद्वितयालियमां॥ ध्यानयष्टनमः॥ ॥आवाहना
 दि॥ अर्घासचानसंषनदवस्तानयाय॥ चन्दनादितय॥ स्नानकूप्य॥ ॥

विदु

तुयाऽऽसिद्धाय॥ ॐ ह्रूं महाबलुया गम्बनी श्रीया इकां पूजयामि न र्थयामि॥ ३॥
वसिष्ठाय नमः॥ यानि मूला कन॥ धनवसिष्ठाय॥ ह्रूं महाबलुया ग
म्बनी कातवकाय जामन॥ धनी वसिष्ठं इन्द्रं स्वाहा॥ वां वदू काय वसिष्ठं इन्द्रं
स्वाहा॥ गं गलय तथ वसिष्ठं इन्द्रं स्वाहा॥ कां कं उपासाय वसिष्ठं इन्द्रं स्वाहा
यां या निनीया वसिष्ठं इन्द्रं स्वाहा॥ ॥ धूपानमः॥ दीपानमः॥ नेवयं

नमः॥ आचमनीयं नमः॥ धनजाययाय॥ ह्रूं १०८॥ मधुसूताय॥ ॥
ॐ नमो नमो नमो॥ काटि सूर्य समप्रसा॥ ऐसा कन कलनतां मद्रतां
पुलमा म्यहं॥ श्रीमद्रतां महाकासीं निर्वालयददायिनीं॥ माददां नाशदां
नित्यां दणवकां यनां रज॥ जय इकासीति॥ कतन॥ नमस्तु नयाय दः
वी॥ अक्षयप्रदम॥ ॥ विन्दुविय॥ नमः॥ श्रीनाथाय॥ सिद्धिनाथ॥ वृज

मनाथय॥ मातसविय॥ कसूंयाइकां॥ ३॥ स्नानकाकायावद्धय॥ न्या
सयाय॥ वसिसकतयसयात॥ सायादाय३॥ लधूक॥ ३॥ संतानमूडान
दवयाकंचादस्नानकृत्वा सकायावनतुदाववाय॥ वसिविसर्जनयाय
संखकउत्त॥ नासिय॥ दवयामनुर्ण॥ ॥ सूर्यसाक्षिधाय॥ संखमः
उत्त॥ कसंखतय॥ ऊंऊं॥ स४ सूर्यायार्घ्यं नमः॥ पूष्यं नमः॥ ॥

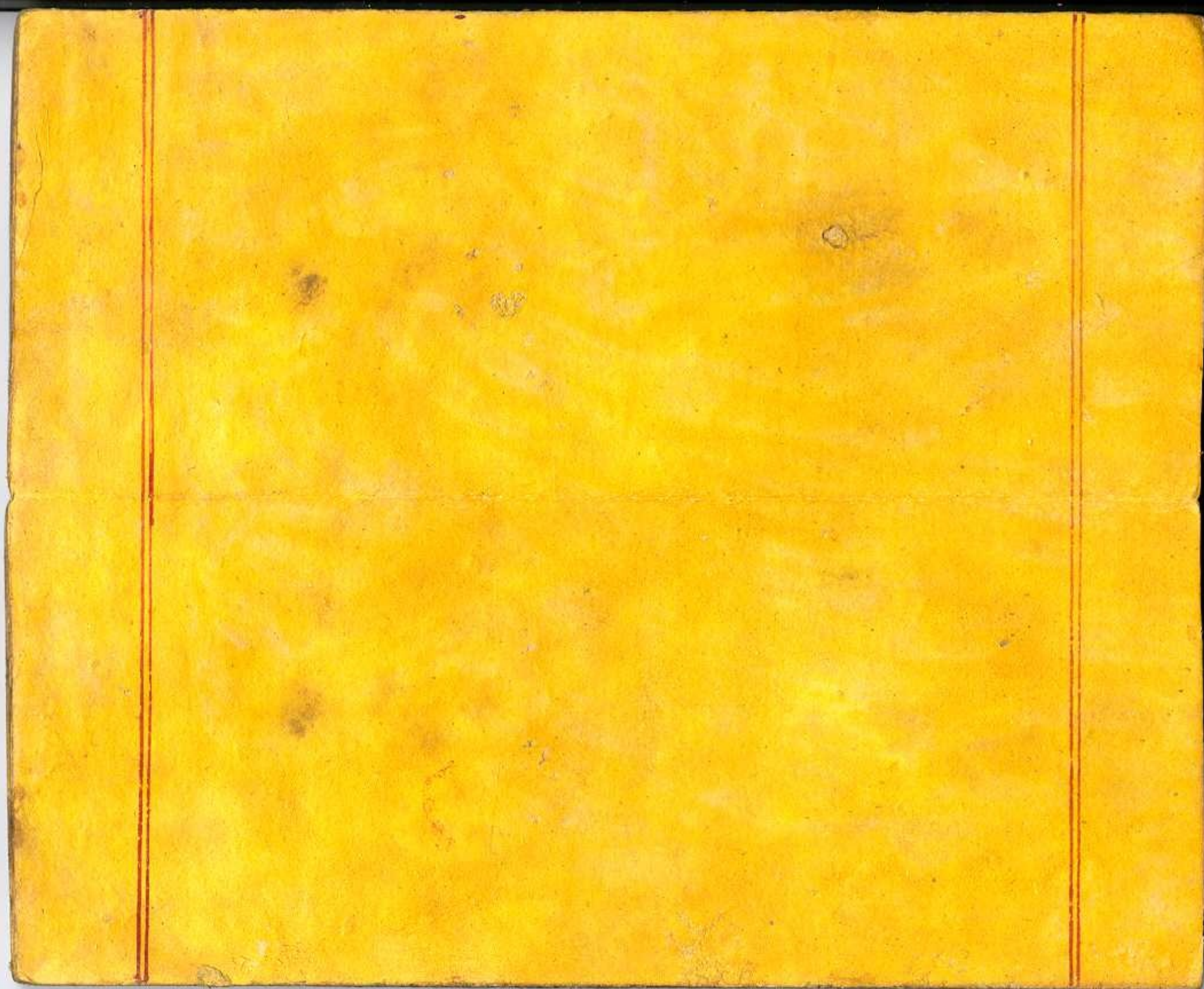
दव. वसिदकादवयावसंधावातासतय॥ (थपूजा॥ ॐ हूं हूं सूर्यमहो
सायनमः॥ नं अग्निमहोसायनमः॥ वं वरूक्षायनमः॥ सं साममहोसा
यनमः॥ मूत्तमनुनजयतय॥ हूं २१॥ चन्दनातपूष्यं नमः॥ (धनूमूजा
कन॥ वसिवाय॥ इति श्रीमद्भक्तिकात्यानिर्यार्चनयद्धितिसमाप्तः॥ ॥
अथ स्नानविधिः॥ इति सिय॥ साहागिसिय॥ नाचासयात १२॥ सग्रन्थि

य॥ नासिय॥ ३॥ सद्यन्त्रिजानावधान॥ ॐ गं वक्रसहस्राणि निववि
ष्णुगानि च॥ सूर्यनामसहस्राणि निखावन्धकनाम्यहं॥ नासिय॥ प्रा
प्त्यामन्यासयाय॥ उत्तमधनं॥ त्रिकाक्षयकालवाय॥ संवत्सरात्
तं॥ आकामूडाकन॥ ॐ अमृतं अमृता रुचं अमृतं वर्षिणी अमृतं आवहः
आवह स्वाहा॥ ॐ गं मन्त्रयमूनैव मन्त्रावनिस्तनस्यति॥ नमो दसिः

प्रकानिजसिन्निर्निर्धराव॥ जाय॥ १२॥ मूलमन्त्र॥ १२॥ जौं जौं स४
थी सूर्याय नमः॥ ३॥ जौं सनमाना नायनाय नमः॥ ३॥ हौं हौं स४ सदा नि
वाय नमः॥ ३॥ श्रीरेनवाय नमः॥ श्रीरूद्रदेवताये नमः॥
र्यं नमः॥ वाक्॥ ॐ अथ यथावर्षमासयज्ञतिथिवाननक्षत्रयागनाभि
कर्तुं मूर्ध्नि सप्तमवाग्रवमादि शुक्लवातिष्ठायां पूज्यति॥ थो मम सु

कसयाय कयार्थं श्रीरवानी भक्त न प्रीत्यर्थं स्निह्यतीत्यर्थं स्नानमहं कनि
षा ॥ स्नानयाय ॥ धवति हितं ॥ नृति स्नानविधिः ॥ अरुममु सर्वदा ॥
अथ वित्ति स्नान ॥ नासिय ॥ प्राजायामन्या सयाय ॥ प्रियानयाद वित्त
तिकाय ॥ साहातिनया स न ॥ ॐ हां हीं हूं हें हों ह ॥ संघतयाव ॥ मूतम
कुनऊय सय ॥ ॐ १० ॥ दवयात आगतन ॥ धमनय सायात ॥ हां हें मि

वायनमः ॥ ३ ॥ साधतायाद न ॥ तसाठ ॥ कष्टस ॥ वाहानस ॥ सर्वाः
ॐ ॥ साहाति सिय ॥ नासिय ॥ ऊय ॥ ॐ १०८ ॥ नासिय ॥ न्यासलिकाय
॥ नृतिरस्मग्रहण ॥ अरुं ह्या ७ ॥ संवत् २२ ॥ अवध अकृ द्वादशी अक
वानधकृ ॥ विप्र श्रीवात गमातन ॥ स्वमिश्र ताह दवयात ॥ धनि
त्यकर्म यद्धति वास्यं वियाह सा ॥ श्री स्वष्ट दवताय स न्नामु ॥ अरुममु





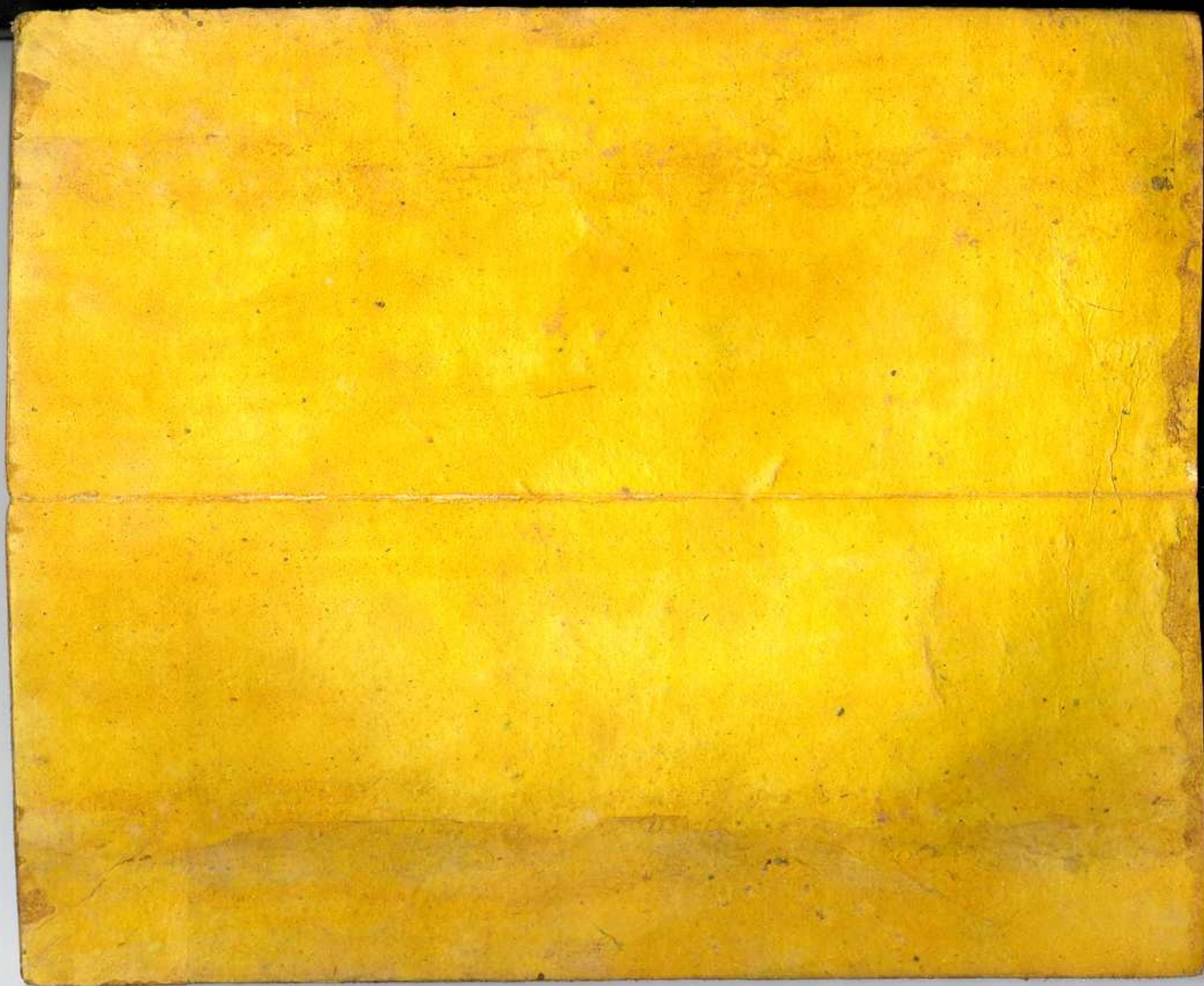


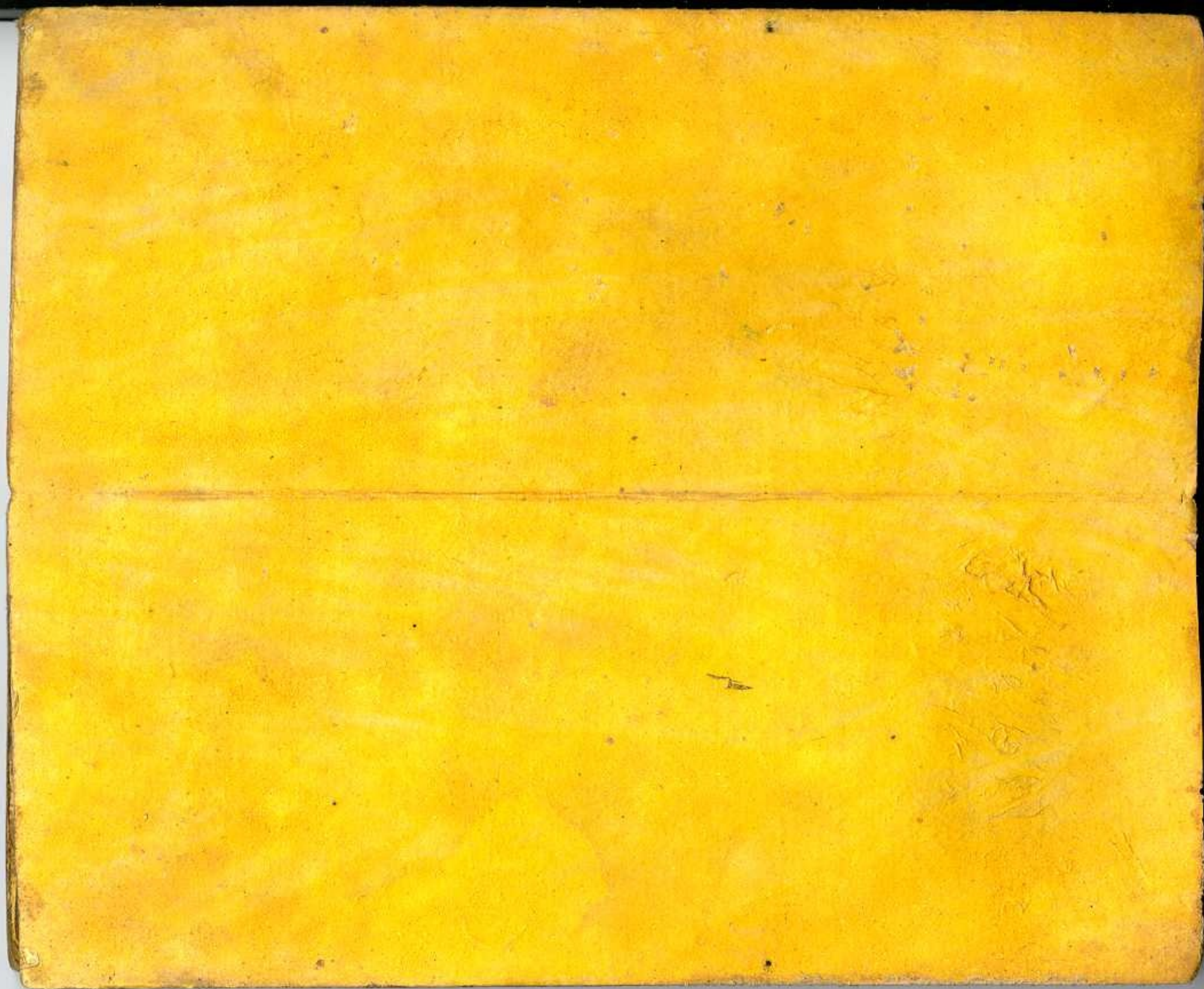
















ASHA ARCHIVES

1.261

MS. A. 1.261

ASHA ARCHIVES



